प्रेस विज्ञप्ति **दिनाँक : 13-02-2006**

शबरी कुंभ में दिनाँक 13 फरवरी 2006 को जारी अपील

धर्म, संस्कृति एवं राष्ट्रभाव का जागरण करें

नई शताब्दी के आरम्भ में आयोजित शबरी कुम्भ के अवसर पर हम पवित्र पम्पा सरोवर के किनारे कुम्भ के अमृतपान के लिए एकत्रित हुए हैं।

देश के लाखों लोगों ने अपनी सनातन हिन्दू आस्थाओं से जुड़ी पवित्र नदियों के जल से ओतप्रोत पम्पा सरोवर में पवित्र स्नान किया और भगवान से देश की एकता, समृद्धि तथा धर्म की रक्षा के लिए प्रार्थना की।

इस सभा में एकत्रित धर्माचार्यों ने देश की समसामायिक सामाजिक एवं धार्मिक स्थिति पर गंभीरता से चिंतन किया।

नई शताब्दी के आरंभ होते ही वेटिकन में पोप ने अपनी घोषणा में कहा कि एशिया में नई फसल कटने के लिये तैयार है। जब पोप जानपाल द्वितीय 1999 में दिपावली के अवसर पर दिल्ली आए थे तो उन्होंने पुनः भारतीयों को ईसाइयत में धर्मान्तरित करने की घोषणा की थी, उनका मानना है कि धर्मान्तरण करना उनका अधिकार है। यह भारत के लिए एक चुनौती है।

2001 की जनगणना के आंकड़ों से भी यह स्पष्ट हो गया कि ईसाई एवं मुस्लिम धर्मावलम्बियों की जनसंख्या भारतीय मूल के विभिन्न धर्मो एवं आस्थाओं के मानने वाले लोगों की तुलना में तीव्र गति से बढ़ी है। इससे देश में गंभीर संकट पैदा हो गया है। वनवासी क्षेत्र इसकी चपेट में आ गया है। एसा लगता है, दस मुँह वाला रावण पुनः जीवित हो उठा है।

उत्तर पूर्वांचल के नागालीम और अन्य पृथकतावादी आन्दोलन, जिनका उद्देश्य भारत से अलग सार्वभौम राज्यों की स्थापना करना है, चर्च संगठनों से प्रेरित हैं।

देश के मध्य वनवासी अंचलों में नक्सलवादी संगठनों ने वनवासी युवकों को भ्रमित कर गुरिल्ला युद्ध की स्थिति पैदा कर दी है। इनके तार भी विदेशी तत्त्वों एवं अभिकरणों से जुड़े हैं।

इससे स्पष्ट है कि आज देश संकट की स्थिति से गुजर रहा है। यह स्थिति देश की एकता और अखण्डता एवं हमारे धर्म तथा संस्कृति के लिए गंभीर खतरा है। राम कार्य में बाधक एवं ऐसे तत्त्वों की संरक्षक शक्तियाँ एक जुट हो रही हैं। ये मायावी तथा कुटिल शक्तियाँ भेद और भ्रम निर्माण करने में निपुण हैं।

शबरी कुम्भ महासम्मेलन का मानना है कि मणिपुर से लेकर द्वारकापुरी तक तथा हिमालय से लेकर कन्याकुमारी एवं अण्डमान निकोबार तक सारा देश एक है। हम सभी भारत माता की संतान है।

हम नागा, मिजो, संथाल, उरांव, गोंड, भील, बोडो, मुंडा, कोल किरात आदि जनजाति तथा मातंग, बाल्मीकि, बौद्ध, महार, रविदासी, बंजारा इत्यादि होते हुए भी हम सब हिन्दू समाज की बगिया के सुंदर फूल हैं।

हर फूल इस सनातन-हिन्दू समाज रूपी विशाल वृक्ष से जीवन रस प्राप्त कर रहा है। वृक्ष से जुड़ने से ही फूल का जीवन सुरक्षित है, अलग होने पर उसका अस्तित्व समाप्त हो जाता है। इस भावना का प्रबल जागरण करने से ही हमारी राष्ट्रीय एकात्मता की भावना पुष्ट होगी, इसी से हम धर्मयुद्ध जीत सकेंगे।

यह धर्मसभा सभी सनातन धर्मी-हिन्दू धर्माचार्यों, सामाजिक कार्यकर्ताओं तथा सामाजिक संगठनों का आह्वान करती है कि वे 21 वीं शताब्दी के इस धर्मरक्षा के यज्ञ में सक्रिय रूप से भाग लें। हमें सामाजिक समरसता दृढ करते हुए अपने समाज में धर्मान्तरण को पूरी तरह से रोककर घर वापसी के लिए तीव्र गति से कार्य करना चाहिए। इस पवित्र कार्य को तन-मन-धन अर्पित कर दृढ संकल्प से पूरा करना ही आज का युगधर्म है।

॥ भारत माता की जय ॥

कृष्णपालसिंह भदौरिया

संपादक

विश्व संवाद केन्द्र – गुजरात

Phone No. : (079) 26579301, Fax. No. : (079) 26579220

E-mail : vskguj@icenet.co.in, info@vskgujarat.com

Website : www.vskgujarat.com